..... सुन रहे हैं। इनका कुछ न कुछ कोई बनाया तो नहीं है। न कोई शास्त्र है या कोई बात है। यह तो जो नाटकों में खेल करते हैं ये बरोबर उनके हैं। यह भी अर्थ वो लोग तो नहीं समझते हैं। जिसमें से कोई अर्थ बच्चों के लिए निकलता है, वो ऐसे रख करके समझाया जाता है। नहीं तो वास्तव में इन गीतों की कोई ज़रूरत नहीं है। न गीतों की ज़रूरत है, न शास्त्रों की ज़रूरत है, न कुछ यहाँ–वहाँ जाने की है। यह तो बाप को बैठ करके बच्चों को पढ़ाना है। इसका नाम ही है पाठशाला। पाठशाला में कोई गीत नहीं बजाया जाता है। पाठशाला में बैठ करके पढ़ाया जाता है। अभी यह तो अपना काम कर रही है भोग लगाना। इसको तो कॉमन बात कही जाती है। सिर्फ यह है कि ये लोग साक्षात्कार से ही सब कुछ काम करते हैं और दूसरा.....अभी उसका कोई पढ़ाई या याद या बाप से वर्सा लेने का तो कोई बात ही नहीं है। यहाँ तो तुम बच्चे जानते हो कि बेहद का बाप आ करके, जो ज्ञान का सागर है, वो बैठ करके बच्चों को सृष्टि–चक्र का राज़ समझाते हैं, जिसको ही भारत का सहज राजयोग का ज्ञान, सहज याद का ज्ञान गाया हुआ है। ये भी तो बाबा ने उस दिन समझाया कि बरोबर किसको परिचय देना यह भी तो ज्ञान है ना। यह बाप तो सर्व का सद्गति दाता है। बाप तो सबका बेहद का प्यारा बाप है। दुनिया में सभी बच्चे उस बाप को याद करते हैं। सिर्फ वो बाप वर्सा कैसे देते हैं, उनसे मुक्ति–जीवनमुक्ति कैसे मिलती है ; क्योंकि मुक्ति और जीवनमुक्ति का समय पास तो हो गया है ना। बरोबर ये दुनिया भारत खास, मुक्तिधाम में तो थे ना। जब मुक्तिधाम में थे, भारत जीवनमुक्तिधाम में थे। ये तो सब बच्चों को बुद्धि में बैठता है ना। दुनिया नहीं जानती है। यह एक डिटेल है। बुद्धि में रोशनी (है) कि बरोबर एक भी बात कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं, विद्वान–आचार्य नहीं जानते हैं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में तो यह रहा कि बरोबर यह ऊँचे ते ऊँचा बाबा है। बाबा ही एकदम कह देंगे ना, बेहद का बाबा है। फिर बरोबर वो बाबा ब्रह्मा द्वारा ही रचना रचते हैं, वो ब्राह्मण बनते हैं। तुम कोई नए ब्राह्मण तो नहीं बनाते हो। मनुष्य को देवता बनाने के लिए पहले ब्राह्मण ; क्योंकि वर्ण चाहिए। ये तो ज्ञान की बातें, समझने की बातें हो गईं ना, जो तुम्हारे काम की हैं। तुम्हारा सारा मदार ही है बेहद के बाप, जो ज्ञान का सागर है, उनसे वर्सा पाना, उनकी शिक्षा से, श्रीमत से। तो तुम बच्चे बैठे हो, जानते हो कि हमको श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ, जिसको कहा ही जाता है श्री भगवान की मत, भगवान की श्रीमत, श्रेष्ठ मत। अभी निश्चय तो तुम सभी बच्चों को है ना कि हमको...। इसमें संशय में नहीं जाना चाहिए, कुछ भी हो जावे। चलते–2 देखते चलना है कि ड्रामा में क्या–2 है, क्या–2 इमर्ज होता जाता है। हम देखते रहते हैं। बाप बैठकर समझाते हैं कि कोई भी बात में घबराने की बिल्कुल दरकार नहीं है। तुम आते ही हो स्कूल में पढ़ने के लिए। कहाँ से? जो सुप्रीम बाबा है; क्योंकि इनको ही...। यह कोई फिलॉसफी नहीं है। इसका नाम ही है स्प्रिचुअल नॉलेज यानी रूहानी नॉलेज और सुप्रीम रूह, जो बाप है, जिसको ज्ञान सागर कहा जाता है, वही वो दे सकते हैं। यूँ तो फिलॉसफर तो बहुत हैं– शास्त्र पढ़ने वाले फलाने। उनको तो बड़े–2 टाइटल दे दिए हुए हैं। उनको कोई स्प्रिचुअल...नॉलेज यानी जो सबका रूहानी बाप है उनकी नॉलेज तो किसको मिलती नहीं है। ये तो सिर्फ तुमको मिलती है और ये निश्चय है कि बरोबर हम बाबा के हैं...। बाबा के भी हैं, जानते हो कि पतित–पावन भी है और बरोबर वो हमको फिर से, जैसे कल्प पहले पढ़े हो वैसे फिर से तुमको पढ़ना है। और कोई भी बातों में नहीं जाना चाहिए। ये सभी प्रिलिमनरी(प्रारंभिक) बातें हैं जैसे पीछे कोई रसम–रिवाज़ होती है। इस ज्ञान की रसम–रिवाज़ बिल्कुल ही न्यारी (है)। देखो, तुम बच्चों को, पढ़े तो सब हैं, बुद्धि में याद है। रामायण,भागवत,वेद,ग्रंथ,उपनिषद ये सभी पढ़े हुए हैं। हम जानते हैं अच्छी तरह से। अब वो सब बाप ने आकर समझाया ये सभी भक्तिमार्ग हुआ। ठीक है ना। अभी ये बाप कहते हैं ना ये सभी भक्तिमार्ग है। ये पढ़ते–2 तुमको क्या फायदा हुआ, ये बताओ। बाबा ने समझाया ना कि देखो, इनके पिछाड़ी तुम्हारा वेस्ट ऑफ मनी, वेस्ट ऑफ एनर्जी, वेस्ट ऑफ टाइम यानी काम करना चाहिए जिसमें कोई फायदा हो। अभी तुम जो कुछ ये यज्ञ,तप,दान,पुण्य करते आए हो, तुमको फायदा क्या हो गया! फायदा तो कुछ मिला ही नहीं। अगर मिला भी तो भी अल्पकाल क्षणभंगुर, सो तो मिलता ही है। बाप से भी तो

अल्पकाल क्षणभंगुर वर्सा मिलता है। गुरू से भी वर्सा मिलता है अल्पकाल...। जिससे भी बोलो, बाप,टीचर,गुरू,मित्र,संबंधी जो भी होवे, हद का अल्पकाल क्षणभंगुर। यह तो ज़रूर गाया हुआ है कि बरोबर 21 पीढ़ी की भी सुख की मत मिलती है। तो तुम यहाँ जानते हो कि बरोबर बाबा द्वारा... बच्चों को 21 जन्म के लिए उनकी मत श्रीमत से हमको चढ़ना है। सो बाप बैठ करके सब कुछ समझाते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में रह करके कैसे अच्छी तरह से बुद्धियोग लगाओ, बाप को याद करो और यह जो नॉलेज देते हैं जिसको मोस्ट सिम्पल कहा जाता है ; क्योंकि झाड़ और ड्रामा को बुद्धि में रखना, यह है मोस्ट सिम्पल। तो तुम्हारी बुद्धि में बरोबर है कि वैराइटी मनुष्य सृष्टि का झाड़ कैसे स्थापना होती है, कैसे फिर वृद्धि को पाता है, कैसे मल्टीप्लीकेशन होती है धर्मों की, मनुष्यों की और भाषाओं की वगैरह–2। नहीं तो पहले एक धर्म, एक भाषा। ठीक है ना। कोई दो भाषाएँ नहीं होती हैं, सतयुग में एक भाषा; क्योंकि एक ही धर्म है। अभी ये तो तुम बच्चों को बुद्धि में रहता है कि बरोबर सतयुग में एक धर्म है और वो देवी–देवताओं का धर्म है, जो प्रायःलोप था। अभी अनेक धर्म हैं। बाबा फिर स्थापना कर रहे हैं। बाप कहते हैं, बाप बच्चों प्रति कह सके ना कि कल्प–2 कल्प के संगम पर मैं आता हूँ; क्योंकि सृष्टि के चक्र को फिरना है, फिर सतयुग आना है, फिर वो आदि सनातन देवी–देवता धर्म आना है। अभी यह तो बिल्कुल सहज समझना है, औरों को समझाना है कि चार (युग) फिरते हैं। सत ते सत था भारत, बड़ा सुखी था, एक ही धर्म था। अभी तुम देखते हो कि धर्म भी बहुत हो गए हैं, भारत का धर्म प्रायःलोप हो गया है। तो अभी लोप हो गया है, दुःखधाम हो गया है। बाबा ने बहुत बच्चों को समझाया कि जो कोई आवे, उनको भला यह...तो बताओ कि देखो, भारत कितना सुखी था, हीरे जैसा था, देवी–देवता राज्य करते थे। उसका नाम ही सुखधाम तो है ना। बस, तुम यही तीन चीज़ भी किसको बताओ कि शांतिधाम जहाँ हम रहते हैं, सुखधाम जिसमें भारत सुखी था। आज 5000 वर्ष की बात है, ये राज्य करते हैं। वो भी बता दो कि 3000 क्राइस्ट के आगे देवी–देवता धर्म था बरोबर। अभी देखो, सुखधाम था, अभी दुःखधाम है; क्योंकि कलहयुग है। फिर सुखधाम को आना है ज़रूर। फिर हमको पहले शांतिधाम में जाना पड़ेगा। तुम बच्चे सिर्फ यह भी समझाते रहो; क्योंकि यह भी कोई जानता तो नहीं है ना। यह बात तुम बच्चों को कौन समझा रहा है? हमको बेहद का बाबा, जिनको ज्ञान है, त्रिकालदर्शी है। ये तीन काल हुए ना– शांतिधाम, सुखधाम, यह दुःखधाम। देखो, बाबा तुम बच्चों को कितना सहज समझाते हैं। और सभी बातें छोड़ दो, जो कुछ भी सुनो, करो, कुछ भी हो जावे। तुम्हारा फर्ज़ ही यह है बहुत सहज कि बाप को याद करना जितना हो सके। जितना याद करेगा इतना नज़दीक जाएगा; परन्तु याद कोई अच्छी तरह से करे भी ना। कर्म करना है, कर्म के लिए टाइम देते हैं कि बच्चे, भले आराम भी करो, कर्म भी करो। ... तीन हिस्सा तो ज़रूर करेंगे ना। आठ घण्टा तो भला कोशिश करके। आधे घण्टे से शुरू करो ताकि पिछाड़ी में आ करके तुम्हारा जिसका भी याद में 8 घण्टा पूरा होगा, ऊपर में रिकॉर्ड होता जाता है। तो बस याद ही करना है, तुमको कोई तकलीफ तो देते ही नहीं हैं। तुमको कोई भी प्रकार का कपड़ा बदलने का या घर–बार छोड़ने का या सफेद कपड़े पहनने का भी। ये तो तुम वहाँ थी, स्कूल थे। दूसरा कोई था ही नहीं तो तुम्हारी ये ड्रेस कर दी। बाबा तो सबको कहते हैं ना। बाबा बहुत खुश होते हैं जब ये साड़ी पहनकर आते हैं। मना तो कोई भी नहीं करते हैं। इसमें कोई भी तकलीफ वगैरह तो कुछ देखने में ही नहीं आती है, मूँझने की दरकार नहीं है। अच्छा, मम्मा (ने) शरीर छोड़ा, इसमें दुःख तो कोई किस्म का होता ही नहीं है; क्यों?.. ज्ञान देने वाला बाप। हमारा है ही मम्मा का भी, बाबा का, बच्चों का काम मम्मा से। अभी बाप मम्मा से कहते हैं– मैं गया। मम्मा तो जैसे मैं हूँ। मैं आता हूँ, इसमें प्रवेश करता हूँ। मैं तो कर सकता हूँ ना। मम्मा को जन्म नहीं देता हूँ। यह तो आगे चलकर के बताएँगे। तो अपनी बुद्धि कहती है कि वो तो अपना हिसाब–किताब ...कर्म, वो भोगकर गई। अच्छा, क्या यह नहीं हो सकता है कि जैसे बाप आते हैं और आ करके मुरली चलाते हैं, क्या मम्मा को भी नहीं भेज सकते हैं कि तुम फलानी जगह जाओ, वहाँ ज़रूरत है। वहाँ तुम जा करके उसमें बैठ करके मुरली सुनाओ। क्या नहीं कर सकते हैं। कई पूछते हैं– भला क्या वो फिर गर्भ में जाएंगी? यह सवाल

पूछने की दरकार ही क्यों पड़ी रहती है? यह तो बाबा के हाथ में है। बुद्धि कहती है जबकि वो पवित्र हो गई, ये भी निश्चय है कि लक्ष्मी का पार्ट उनका है ज़रूर ; क्योंकि तुम जानते हो वो सबसे तीखी थी। बाबा उनसे और ही सर्विस कराने के लिए, हाँ हो सकता है उनको गर्भ में न जाना पड़े। ...यह समाचार तुम्हारे पास आएँगे। बाबा तुमको बताएगा। ये तो बाप बैठकर बच्चों को समझाते हैं कि बाबा उनको कोई भी शरीर में प्रवेश करा करके मुरली चल सकती है। वो समझेंगे कि बरोबर यह मम्मा कहेंगी। वो वाणी ऐसी चलाएगी जिससे बच्चे समझेंगे यह तो मम्मा प्रवेश करके वाणी चला रही है। क्या नहीं हो सकता है! तो तुम समझेंगे कि हमारी मम्मा कोई गई तो नहीं है, भई पुराना शरीर छोड़ दिया। अच्छा, अभी देखो आती है, जैसे बाबा शरीर में प्रवेश करके नॉलेज देते हैं, वो नॉलेज देने लग पड़े। ऐसे तो कोई नहीं है... और ही बहुत तीखी होगी; क्योंकि बाप को तो बच्चों का भाग्य बाला करना है और शो करना है, इनका नाम बाला करना है। बाप भी तो तुम्हारा नाम बाला कर रहे हैं ना। तुम बच्चे बाप का नाम बाला कर रहे हो, बाप के मददगार हो। हमको कौन पढ़ाते हैं? यह बाबा पढ़ाते हैं। यह बाबा से हम 21 जन्म के लिए वर्सा ले रहे हैं। जो बाप की महिमा करते, बाप तुमको ही पढ़ाते हैं। बाबा ने सुबह में भी समझाया बच्चे, तुम ब्राह्मणी हो। आगे चल करके देवियों की मूर्तियों से शायद कोई आवाज़ भी निकलती रहे कि हम पहले ब्रह्माकुमारियाँ थीं और हम फिर देवता बने। अभी हम ब्रह्माकुमारियाँ हैं। हम ये देवताओं से 84 जन्म के बाद फिर से आ करके ब्रह्माकुमारियाँ बनी हैं। फिर से तो तुम बनती हो ना। तो ये आगे चलते–2, मनुष्यों की बुद्धि में आवाज़ सुनते–2 तुम्हारा बड़ा नाम बाला होना है। घबराने की तो बिल्कुल कोई बात ही नहीं है एकदम ; क्योंकि घबराएँगे तो हराय देंगे। थोड़ा भी कोई बात में मूर्छित हुआ तो गोया जैसे तुम लोगों ने माया से हार खाई। तुमको हार तो बिल्कुल खानी ही नहीं है, सदैव हर्षित। जितना तुम हर्षित रहते रहेंगे...। किसमें हर्षित रहते हो? ...भले श्री लक्ष्मी और नारायण के जो बच्चे होंगे वो इतना हर्षित नहीं हो सकते हैं, जितना तुम हर्षित हो। वो फिर भी तो कोई राजा के बच्चे हैं, देवता के बच्चे हैं, मनुष्य के बच्चे हैं। दैवीगुणों वाला मनुष्य है ना। तुम तो कहते हो कि हम ईश्वर के बच्चे हैं। तो कौन बड़े हुए? ईश्वर के बच्चे बड़े हुए या देवताओं के बच्चे बड़े हुए? कोई हिसाब तो करो। तुम्हारा तो बड़ा नशा है। जातियों के ऊपर भी तो होता है ना कि हम शादी करेंगे तो ऊँची जात में, ऊँचे कुल में। ऊँच कुल में करते हैं ना। देखो, तुम तो अभी कितने ऊँच कुल के हो, कितने भाग्यशाली हो, ईश्वरीय कुल के हो। तुम बच्चों को तो नशा रहना चाहिए। बाबा को अच्छी तरह से जानते हो.....और प्रजापिता ब्रह्मा को भी जानते हो कि हम इनके मुखवंशावली हैं। वो तो करके कहा जाता है कि यह माता भी है; क्योंकि इनके मुख से इन द्वारा ये बच्चे एडॉप्ट करते हैं। इसलिए उनको ही त्वमेव माताश्च पिता कहते हैं। अच्छा, पीछे मम्मा का नाम गाया हुआ है– सरस्वती ब्रह्माकुमारी, सरस्वती ब्रह्मामुखवंशावली। दुनिया नहीं जानती है कि जगदम्बा कौन है, ब्रह्मा की क्या लगती है। गाया है ब्रह्मा की बेटी। तो वो भी बच्ची है। फिर बाकी तुम भी तो बच्चियाँ हो। इनमें कोई होशियार होती हैं। कोई–2 ब्रह्माकुमारी तो कहाँ–2 भाषण करती हैं तो ऐसे मत समझो...। कोई वक्त में ऐसे बैठ करके भाषण करेगी तो जैसे कि मम्मा से भी तीखी जाती है। ...नाम पड़ गया है कि भई मम्मा सबसे तीखी है; परन्तु नहीं, यहाँ बहुत कम थोड़े ही है। अरे, जगदीश है ना। यह बड़ा तीखा है; क्योंकि पढ़ा हुआ है बहुत ही अच्छी तरह से। वो भी पढ़ती है ना। वो पढ़ा हुआ है। वो जब बैठ करके समझाते हैं, बहुत तीखा समझाते हैं। बाबा खुद भी कहते हैं मेरे से अच्छा समझाते हैं ; क्योंकि दृष्टांत वगैरह, वो सभी शास्त्रों में से कुछ न कुछ सार निकाल करके, बहुत तीखा जाता है। फीलिंग आती है कि यह जैसा समझाते हैं और तो कोई भी नहीं समझा सकते हैं सिवाय बाप के। संजय का नाम भी तो है ना। भले नाम रख दिया है। हम लोग भी वही नाम रख दिया है। पर तुम जानते हो क्या यह बैठ करके मैगजीन लिख सकेगा? बिल्कुल नहीं; क्योंकि उनकी बुद्धि ऐसी है जो धारणा करते हैं। यह तो नहीं लिख सकेगा। तो फिर होशियार हुआ ना। मम्मा लिख सकेंगी? मैंगजीन लिखेंगी या इतनी गीता वगैरह लिखेंगी? फिर कौन होशियार हुआ? सब बुद्धि से काम लेना होता है ना। पीछे जो–2 भी अच्छी तरह से धारण करते हैं,

कराते हैं वो अपना ऊँचा पद पाएँगे। पढ़ना तो है ही ज़रूर। पढ़ाई को तो छोड़ना नहीं है ना। कोई भी संशय, कोई भी आए, कुछ भी हो, कोई भी अनबनत हो किसकी, ब्राह्मणियों से नहीं बनती। बहुत चिट्ठी आती है ये फलानी ब्राह्मणी से इनका कुछ मतभेद हो गया ; इसलिए पढ़ाई छोड़ दिया। अगर पढ़ाई छोड़ दी...। पढ़ाई तो पढ़ना है बाप से। अच्छा, वो नहीं, बाबा को लिख देवे कि बाबा, इनसे हमारी मतभेद होती है। हमको तो मुरली अलग भेजो तो हम पढ़ते रहेंगे। अच्छा बच्चे, अलग लो। उसमें क्या है! मतभेद है। पढ़ाई तो पढ़ो। पढ़ाई तो पढ़ते रहो ना। पढ़ाई मत छोड़ो। बाकी अगर स्टूडेण्ट ने पढ़ाई छोड़ दी तो क्या पढ़ेंगे? तो कोई भी बच्चे... याद कर देना– ये पढ़ाई छुड़वाना करना ये सभी फिर (है) रावण मत, आसुरी मत। वो झट बुद्धि को खैंच लेते हैं। तो सब बच्चे याद रखें कि तुमको बाप से पढ़ना है अगर निश्चय है तो। इसमें कोई भी प्रकार का संशय नहीं लाना है। पढ़ना ज़रूर है। बेहद के बाप से वर्सा पाने के लिए। फिर वो आय ब्रह्मा द्वारा पढ़ाएँगे ना, नहीं तो कैसे पढ़ाएँगे? पढ़ाएँगे भी ज़रूर ब्राह्मणों को। तो पढ़ते रहना है। घर में पढ़ो, जहाँ चाहिए, विलायत में जाओ पढ़ो, पढ़ना है। अच्छा, न पढ़ते हो, भला बाप को तो याद करेंगे ना। अच्छा, भले कोई से भी रूठो, सबसे रूठो। बाप से तो नहीं रूठना है ना। उनसे तो वर्सा ही लेना है। कोई से पढ़ना पसन्द नहीं आता है। अच्छा, हिम्मत हो तो घर में बैठ जाओ। बाबा को याद करो और औरों को भी याद दिलाओ। तुम बच्चा, भाई–बहनों! बाप को याद करो। वो तो बाबा है ना, भगवान है ना। भगवान के हम बच्चे ठहरे ना। भगवान तो सृष्टि रचता है ना– सुखधाम। तो हमको सुखधाम का वर्सा क्यों नहीं होना चाहिए? बरोबर था ना... यह भारत तो स्वर्ग था। तो वर्सा था, अब नहीं है। अब फिर बाप को याद करो। बाप ने ही कहा है। सुनना है। यहाँ सुनकर तो जाते हैं ना। बाबा कहते हैं– अब फिर मेरे को याद करो और वर्से को याद करो।.. बच्चों को जितना अच्छा हो बस गीता सुनाते रहो। .... यह गीता है ना। सिर्फ बाप ने जो गीता ज्ञान किसको सुनाया भी होगा तो फिर औरों ने औरों को भी तो सुनाया होगा, नहीं तो इतनी बादशाही कैसे स्थापन हो सकती है! ज़रूर एक/दो को...। तो देखो, यहाँ है ही पढ़ना है, पढ़ाना है। यह इम्तहान भी अभी पूरा होना है। यह भी जानते हो हम पढ़ते ही है भविष्य 21 जन्म के लिए। इसमें फिर भविष्य 21 जन्म के लिए वर्सा पाने के लिए पढ़ना ही है। कोई भी बात आवे उनमें तुम्हारा क्या जाता है? तुम क्यों उनसे मूँझते हो– ये न हुआ, ये हुआ–ये न हुआ, ये हुआ। ये तो बहुत बातें हैं, आगे चलकर के पता नहीं क्या होगा! गवर्मेन्ट ऐसे कोई वक्त में तुम्हारे सभी सेन्टर्स को ही बंद करा देगा, उठा ही देगा, पीछे तुम क्या करेंगे! तो भी क्या तुम चले जाएँगे? नहीं। यह ज्ञान तो हमारा वर्सा है, बाप से लेना (है)। वो धंधा तो तुम करते ही रहेंगे, कुछ भी होगा। ये तो कोई प्रॉपर्टी नहीं है जिसको कोई हाथ कर लेंगे। तो अनेक किस्म–2 के विघ्न पड़ेंगे। हनुमान तो सबको बनना है ना। महावीर तो सबको बनना है ना। क्यों और सभी का नाम नहीं है, सिर्फ हनुमान है? सुग्रीव कहाँ गया? .. बाली कहाँ गया? उनका नाम क्यों नहीं ? तो मिसाल दिया है कि ऐसे मजबूत रहना चाहिए निश्चय में जो कितने भी तूफान आएँ, कितने भी विघ्न आएँ तो भी बाबा की याद से और अपने वर्से की याद से हटना नहीं है। इसलिए बाबा बार–2 कहते हैं, कई जब आते हैं (कहते हैं) कि मम्मा चली गई है। अरे, यह तो अज्ञान काल में वो बच्चे कहते हैं। तुम्हारी मम्मा कहाँ चली गई हैं? वो तो सर्विस पर गई है ना। तुम जानते हो कि वो सर्विस पर गई है। बच्चे जानते हैं कि बाबा कहते हैं कि वो सर्विस पर गई है। तो बाबा फिर उनसे पूछेंगे कि तुम उनको याद करके क्यों रोती हो? तुमको तो रोना ही नहीं है। तुम रोती तब हो जबकि शिवबाबा को याद नहीं करती हो। तो तुमको रोना आता है। तुम कोई साकार देहधारी को थोड़े ही याद करते हो। तुमने प्रण किया है, वचन किया है कि हम एक को ही याद करेंगी, बस दूसरा न कोई। फिर अपने उस प्रण से तुम डिगती क्यों हो? उसको तो याद ही नहीं करना है। तुम्हारा काम ही है– बच्चे, तुमको बाप को याद करना है। तुमको बाप के पास जाना है। पहले मुक्तिधाम में जाना है ना। ....मम्मा के पास कहाँ जाएँगे! मम्मा तो जब यह महारानी बनेंगी तब वहाँ जाएँगे ना। मम्मा के इस शरीर को तुम याद कैसे कर सकते हो! जब बच्चे आते हैं तो बाबा उनकी शक्ल दूर से ही देखते हैं कि उदास एकदम। अरे, क्या

तुम बाबा को परेशान करने आई हो? ऐसे किया जाता है जब कोई का मरता है, तो कोई आते हैं। अरे पर, तुम्हारा क्या मरा है? तुम्हारा कौन मरा है? देहधारियों को तुमको याद ही नहीं करते(करना) हैं। तुम्हारा आँसू बहता ही तब है जबकि देहअभिमानी बनकर देह को याद...नहीं तो तुम्हारा आँसू कभी बहना ही नहीं चाहिए; परन्तु वो अच्छी अवस्था चाहिए। नहीं तो इनके बहुत हैं जिनके मित्र–संबंधी मरते रहते हैं और रोते रहते हैं। यहाँ तो रोना प्रूफ बनना है। जबकि वहाँ तुम बच्चों को कोई को भी बिल्कुल रोने का है ही नहीं, तो प्रैक्टिस तो यहाँ चलनी है ना। यहाँ की तुम्हारी सारी प्रैक्टिस अविनाशी बन जाती है। तो तुम्हारी यह प्रैक्टिस ठीक होनी चाहिए ना। ...हर्षित हो करके बोलो हमको तो अपने बाप से काम है। हर एक का अपने बाप से काम है। बाबा का भी बाप से काम है और उसमें सदैव हर्षित रहो तभी समझा जाएगा कि कितनी स्थिरियम हैं। कहते हैं हमारा तो काम ही है शिवबाबा से और दूसरे कोई से भी काम नहीं है। तो क्या करेंगे? इसलिए बाबा देखता है, आजकल जो आते हैं, आते ही पता नहीं क्यों। मम्मा को तो देखने का नहीं है। अच्छा, मम्मा तो चली गई, फिर क्या आना ? बाबा, हम आते हैं फिर से आपसे भरने के लिए, जैसे बादल आते हैं। तो बाबा कहें, बिल्कुल ठीक है। बाकी कोई यहाँ आकर आँसू बहाते हैं, बोलते हैं– यह बादल आए हो? यह भरने के लिए आए हो या अपनी पत गँवाने के लिए आए हो? तुम यहाँ सागर पर आए हो, सो बाबा तुमको बरसात भरते रहते हैं। तो कहते हैं जो प्वाइंट समझावे, वो समझकर, धारण करके, भर करके, फिर जा करके औरों को समझाओ। तुम्हारा धंधा ही यह है। यहाँ मधुबन में बाबा के पास आते ही क्यों हो ? क्योंकि वो है गंगा और जमुनाओं का मेला और यहाँ तो तुम्हारा मेला होता ही है सागर से। सागर तुम नदियों को रिफ्रेश कर रहे हैं। तुम्हारा यहाँ आना ही है सागर से रिफ्रेश होना, और कोई बात नहीं और फिर जा करके वर्षा बरसा दिया। तुम्हारा धंधा ही यह है। वो है ज्ञान का सागर, तुम हो बादल। तुमको यहाँ भरना है। बाबा चिट्ठियों में लिखते हैं कि बादलों को ले आओ। बाकी ऐसे नहीं ले आओ, जो बिचारे कुछ समझ भी नहीं सकते हैं। उनको तुम वही कहेंगे कि शिवबाबा को याद करो, शिवबाबा को याद करो। वो शिवबाबा को भी नहीं याद कर सकती है। बोलती है– बाबा, घड़ी–2 भूल जाती हूँ। अभी जो घड़ी–2 भूल जाती है उसकी धारणा क्या होगी! यह भी बाबा ने सैंक्शन(अनुमति) दिया है बच्चों को कि बच्चों को ले आओ। क्यों? बोलती हैं कि हम बच्चे के कारण रिफ्रेश होकर नहीं आ सकती हैं, फिर बाबा हम कैसे आवें? हमारी दिल तो होती है सागर पर जाने; परन्तु यह जो बंधन है उनको क्या करें? तो बाबा कहें– अच्छा, जिनका कोई हल्का होवे, एक/दो बच्चा लाचारी हालत में, उन बच्चों को सहूलियत हो, छुट्टी मिले; क्योंकि छुट्टी देते नहीं हैं। तो भले आ करके बिचारी रिफ्रेश हो करके जावे। यहाँ जगह ही है आने की और आ करके बादल भर करके कल्याण करने की; क्योंकि तुम बच्चे हो ही कल्याणकारी के बच्चे कल्याणकारी। ये सभी शक्तिदल हैं ना। इनकी शेर पर सवारी तो उनको हाथी पर सवारी। ऐसे दिखलाया है। मंदिर में जाओ तो देखो हाथी पर सवारी है महारथियों की, शेर पर सवारी है शक्तियों की। उनकी कोई नामाचार... तुम दिलवाला मंदिर में अंदर जाओ, तो हाथियों पर भी सवारी है और शक्तियों की कहते ही हैं शेर पर सवारी। दोनों ही महारथी और गाते भी हैं– गज को ग्राह ने खाया। बरोबर महारथियों को भी यह माया रूपी ग्राह खा जाती है। देखो, कितना गाया हुआ है और बरोबर ऐसे होता है, छोड़ देते हैं तो खा जाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं तुमको तो बहुत–2 हर्षित रहना चाहिए। यह भूलना ... कर देते हैं। गाते हो बरोबर हम शिवबाबा के पौत्रे–पौत्री, हमारा डाडे के वर्से का हक लगता है। तुम आए ही हो नर से नारायण बनने या स्वर्ग का मालिक बनने। तो स्वर्ग के मालिक तो सब बनते हो, उसमें कोई शक नहीं है। बहुत–2 ढेर हैं। जो थोड़ा भी सुनते हैं सो भी आ जाते हैं; क्योंकि बाप ने समझाया इस अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता है। सिर्फ 'बाबा' कहा तो बस कुछ न कुछ बन गया। बाबा का इतना मूल्य है। एक दफा मुख से 'बाबा' निकला, बरोबर यह हमारा बाबा है और उनसे हमको वर्सा ज़रूर मिलना है। कौन–सा? स्वर्ग का। तो तुमको कितनी खुशी चाहिए। इस दुनिया में खुशी किसको... और खुशी भी ऐसी चाहिए (कि) कितनी भी आफतें आवें, कितना भी हो, तुमको खुशी...। जानते

हो कि विनाश होने का है। होना ही ज़रूर है। यज्ञ उसके लिए रचा हुआ है। तुम पढ़ती इसके लिए हो। तो सब मर जाएँगे, हम राज्य करेंगे। ...मरेंगे तो तुम भी; पर हम आकर राज्य करेंगे। जो–2 अच्छी तरह से पढ़ेंगे, आ करके...। यह तो बड़ी वण्डरफुल, ऊँचे ते ऊँची पढ़ाई है। इस पढ़ाई के ऊपर बच्चों को बहुत अटेंशन देना चाहिए, अगर अपना कल्याण करना चाहते हैं तो। बस पढ़ाई, पढ़ाई और पढ़ाई। फिर तुम्हारा कभी भी आँसू नहीं आ सकता है। बिल्कुल शांत बैठे हैं। अरे भई, किसकी याद में बैठे हो? मन्मनाभव, मद्याजीभव। यह तो था ना 5000 वर्ष पहले भी। बाबा का महावाक्य है। इसका अर्थ ही निकलता है– मुझ अपने बाप को याद करो, अपने वर्से को याद करो। चतुर्भुज तो तुम्हारा वर्सा है ना। बरोबर पढ़ती हो, बरोबर जानती हो कि बरोबर बाबा पढ़ाते हैं और हम बाबा के पास जा करके, अपने घर जाकर...। अरे, सिर्फ यही याद रखो कि अब ये नाटक पूरा होता है, 84 जन्म पूरा...। अभी बाबा आए हैं हमको घर ले जाने के लिए ; परन्तु उनको शृंगारना ज़रूर है। अपने शृंगार का तो पता है ना कि यह हमारा शृंगार है। अभी वो शृंगार है? ज्ञान के शृंगार से तुम यह बन रहे हो। तो ये रख दो घर में, रोज़ सुबह को उठकर देखो। मैं नहीं समझता हूँ कि तुमको कभी भी कोई घुटका आएगा। सिर्फ सुबह को उठ करके इनको सामने रख दो। बस, ज्ञान तो तुमको है ही बरोबर कि यह बड़ा बाबा, इन द्वारा यह वर्सा...। यह वर्सा है ना। ये छोटेपन में लिया है ना। बस, यह तो राइट है ना। बस, तुम्हें और कुछ नहीं बोलते हैं, धंधे से थककर भी घर जाओ तो घर में ये बड़ा चित्र रख दो और इनसे भी बड़ा, जैसे वो बड़ा है। तुम आ करके देखेंगे और जो भी घर में आए (उनको) समझाओ– यह बाबा यह ब्रह्मा द्वारा यह वर्सा। यह इन द्वारा फिर कलहयुग का विनाश। यह आ जाती है एकदम। बस, यह तीक मचाते रहो एकदम। एक ही तीक भी तुम्हारी...। पीछे घर में जो आवे... मानो, न मानो। बस, हम ये सीखते हैं बाबा हमको इन द्वारा राजयोग सिखलाते हैं यह बनने के लिए। जब वो सिखलाई पूरी हो जाएगी, दुनिया विनाश होगी। जब तीसरी आँख खोलते हैं, खेल खतम हो जाता है। तुमको बनना है। बस और कुछ नहीं करना है, इनको ही याद करना है और ये वर्से को याद करना है। बिल्कुल ही सहज बातें। जो आवे बस ये लगा ही दो एकदम। ये चित्र कोई भी बना सकते हैं। ये कोई जास्ती थोड़े ही खाते हैं। सौ रुपये का चित्र खर्च लो। ये तुम्हारी पढ़ाई है रात–दिन के लिए। उसमें तो खर्चा लगता है ना। एक–2 बच्चों को पढ़ाई का कितना खर्चा लगता है! इनमें कोई भी चित्र नहीं है। थोड़ा बड़ा होता है तो मज़ा आता है। छोटा है.. नहीं वो साइज़ बिल्कुल ठीक है। हर एक बच्चा अपने घर में रख देवे। पहले–2 ये धंधा करे। पीछे वो जो दो पैसा कोई को बीज देते हैं ना, वो पीछे बो ले। पहले सब अपने पास ये रखे। तो वो बहुत सहज होगा। तुम्हारे मित्र–संबंधी आएँगे, कोई भी आएँगे, बाबा कहते हैं कि तुम्हारे से बिल्कुल खुश हो जाएँगे; क्योंकि तुम दूसरे की कोई बात नहीं सुनाते....बाबा.....देते हो। फिर बाबा का रूप फिर समझाना। जब ये समझ जाए, पीछे उनको डिटेल में समझाना थोड़ा अच्छी तरह से। नहीं तो ये बिल्कुल ठीक एकदम। देखो, ये किसने बनवाया? बाप ने देख करके बनाया। ये कृष्ण को और इनको एकदम अलग कर दिया। इनको सतयुग में भेज दिया तो इनको द्वापर में भेज दिया। तो ये चित्र बाबा कहते हैं। एक तो हमेशा कहते हैं कि ग्रामोफोन रखो, जिनमें जो अच्छे चित्र...। उनसे भी बड़ा ये अच्छा। तुमको कुछ भी पीछे रखने की दरकार नहीं है। बस, इनके ऊपर समझाओ। तो ये ओरली आ जाएगा ना। मनुष्य पढ़ेंगे। बरोबर प्रजापिता ब्रह्मा तो यहीं होगा। उन द्वारा पढ़ाते हैं बरोबर नई दुनिया का मालिक बनाने के लिए। भला क्यों नहीं रख सकते हो? बच्चों की बुद्धि में बैठता है (या) यह भी नहीं बैठता है, भूल जाते हैं? घर में रखा होगा, दुकान से या धंधे से आएँगे, बस यह देखेंगे अरे बिल्कुल ही खुश हो जाएँगे। जो आवे, अपने बच्चे को भी यही कहो– देखो, यह सबका बाबा है और प्रजापिता ब्रह्मा यह भी तो सबका हो गया। इन द्वारा यह पद प्राप्त कराते हैं। सिर्फ तुम इनको याद करो और इस वर्से को याद करो। मन्मनाभव, मद्याजीभव। गीता का तो अर्थ ही है ना। सिर्फ कृष्ण ही भगवान (है)। अक्षर तो वही दो हैं ना। कहते हैं भगवान है, न तो उनकी बायोग्राफी है। उनकी बायोग्राफी (में) बिल्कुल फर्क है। ये भी करो, तुम बहुत खुश हो जाएँगे। पहले–2 खर्चा ये करो। बाबा बरोबर वो बनवाने

की कोशिश कर रहे हैं। देखो, मैं बॉम्बे वालों को अभी भी कहता हूँ, निर्वैर है, रमेश है, फलाना है, तुम और कुछ भी काम नहीं करो। तुम्हारी इतनी लम्बी–चौड़ी जो प्रदर्शनी है, छोड़ दो। ये चित्र में सब आ जाता है। यह एक बड़ा बना करके और जो आवे उन्हें समझाते रहो। यह एकदम सबसे अच्छे में अच्छी चीज़ है। वो तो बात बाबा घर के लिए कहते हैं। वो फिर झाड़ में भी थोड़ा जास्ती समझाना होता है और ये तो बिल्कुल ही सहज है। कोई बोलता है नहीं हमारा... तो मैं बच्चों को ऑर्डर देता हूँ कि जाओ, रमेश है..। रमेश से कहते हैं स्क्रीन पर बनाने से सस्ता पड़ेगा। मैं ऑर्डर देता हूँ (कि) चलो, स्क्रीन पर हमको हज़ार बनाकर दो। बनाने में सस्ता पड़ेगा फिर जितना चाहिए बाबा से मँगा लें। देखो, इतने चित्र बनाते हैं, ये खर्चा तो खाते हैं ना। जब छपाई होती है (तो) ये सब भी तो खर्चा खाते हैं ना। तो बाप बोलते हैं कि अच्छा, गरीब हो तो बाबा से फ्री ले लेवे। जो अफोर्ड कर सके भले बनावे। अच्छा चलो, दूसरे फिर जो आएँगे उनको मैं यह सौगात दे दूँगा। क्या बात है! शिवबाबा का भण्डारा है ना। तो कोई भी हर्जा नहीं है। ...घर में रखो तभी भी तुम लोग बड़ी खुशी को पाएँगे, बहुत खुश होंगे। ये बहुत अच्छे चित्र हैं बिल्कुल ही। पूरी समझानी है। वो कृष्ण को अलग, फलाने को क्या कर दिया है एकदम। जैसे कि शास्त्र वगैरह पढ़ करके बुद्धि में एकदम एक भूसा भर गया है। तो बाप ने कहा है ना कि बुद्धि से ये भूसा निकालो। ये जो कुछ पढ़े हो, सब भूल जाओ। हियर नो मोर ईविल। जब मैं आया हूँ, नो नो मोर ईविल सुनो। कुछ भी ये कथाएँ–वार्ताएँ फलाना अभी कुछ नो। सिर्फ मेरे से दो अक्षर सुनो। हम थोड़े ही इतना तीक–2 बताते हैं। बहुत पढ़े हो। मैं तुमको बिल्कुल एक/दो अक्षर में ही... जिसके लिए तुमने भक्ति की है, भगवान से वर्सा पाने के लिए। मुक्ति–जीवनमुक्ति मैं तुमको दो अक्षर से देता हूँ। इसलिए तो एक सेकेण्ड का है– मन्मनाभव, मद्याजीभव। घड़ी की सुई सामने रखो। तो देखो, सेकेण्ड फिरता है ना। बाप को याद करो। बस, उसमें भी वर्सा आ जाता है। क्यों गाया हुआ है 'सेकेण्ड में' ? बाबा बैठ जाते हैं तो...। आपस में चिटचैट बहुत की, तीन घण्टे की; परन्तु एक इतना में ही तुमको आसमान में चढ़ा देता हूँ। (किसी ने कहा– बाबा, हमारा क्लास कैसे लगा?) अच्छा है, फर्स्टक्लास। ...यह तो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करते हो ना। उसको बाबा थोड़े ही कुछ कहेंगे। ...यह तो मैं युक्ति बताता हूँ कि क्या करो, अपने घर में रखो। अरे, इनसे ही तुम्हारा...। तुम्हारे ये घर में जैसे कि यूनिवर्सिटी भी है और यह बड़ी हॉस्पिटल भी है। तुम बहुतों को इन पर समझाने से एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बना सकते हो। इसमें क्या खर्चा है ! और देखो, ऐसे होता है ना! पीछे तुम्हारे पास छोटे झाड़–वाड़ तो सभी हैं। कोई ...बोले मुझे डिटेल में... अच्छा चलो बैठो, तुमको समझावें। उनको पहले टेम्पटेशन तो देना चाहिए ना। हद के बाप से वर्सा लेते हो, अरे बेहद के बाप से तो वर्सा लो। 'लो' क्यों कहते हो? हम ले रहे हैं ना। तो तुमको हम राय देते हैं। हम कहते हैं तुम ट्राई करो, हमारी सुनो, यू विल नेवर क्राई फॉर हाफ कल्पा ...तुम ट्राई करो हमारे से, हम गारंटी करते हैं कि आधा कल्प तुम कभी नहीं रोएँगे, कभी बीमार नहीं पड़ेंगे, कभी कंगाल नहीं बनेंगे। अच्छा! गुड ईवनिंग।